अंक–12 वर्ष 2023

हिन्दी पत्रिका 12 वां ई–संस्करण

# धरोहर

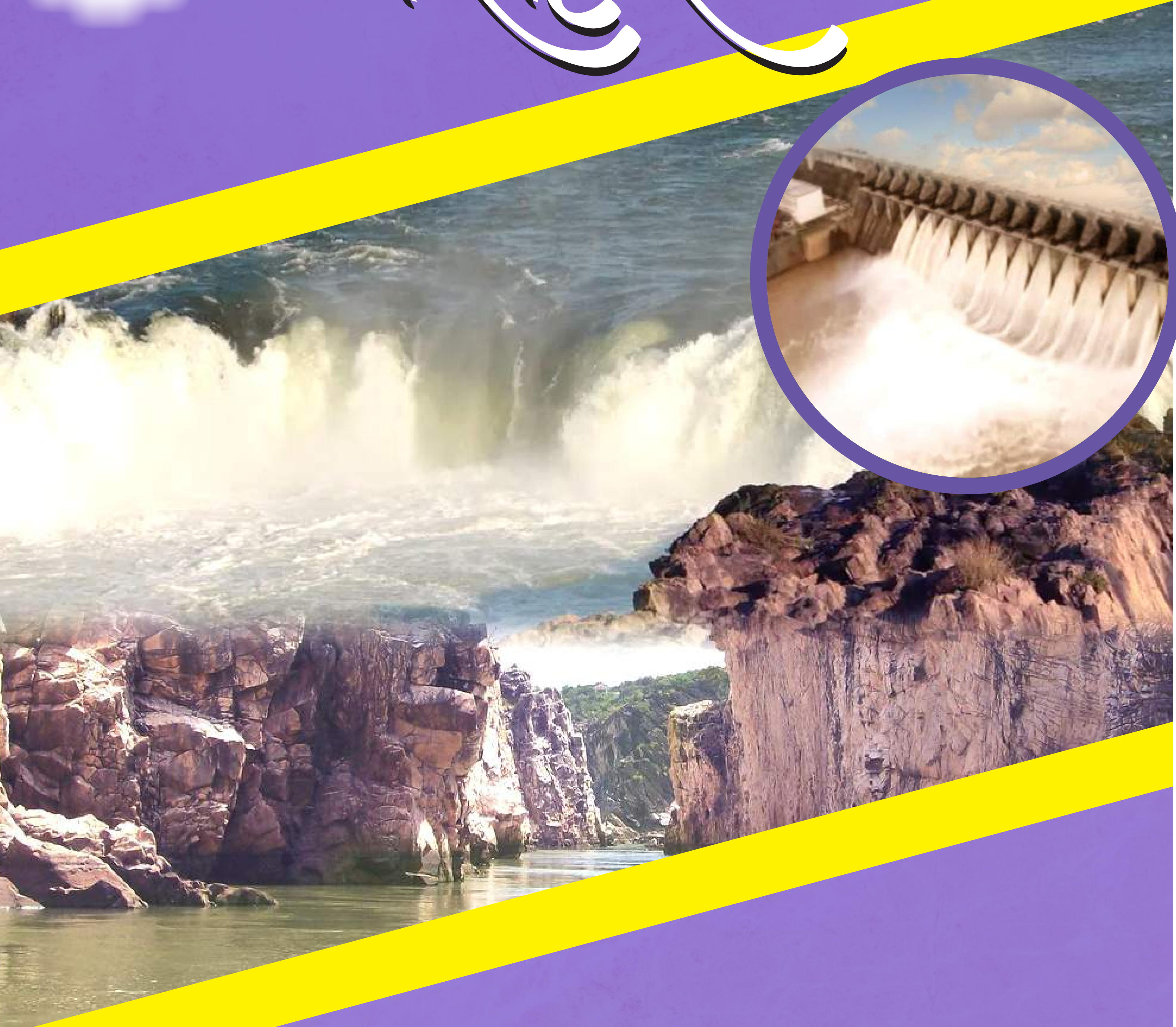

## भारतीय सर्वेक्षण विभाग

सर्वेक्षण सदन, विजय नगर, जबलपुर

भारतीय सर्वेक्षण विभाग म.प्र. भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के निदेशक, श्री धीरज शाह,
श्री संदीप श्रीवास्तव, निदेशक राष्ट्रीय भू–स्थानिक आँ. के. देहरादून,
श्री दीपक कुमार, अधीक्षण सर्वेक्षक, ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा देहरादून,
तथा वरिष्ठ अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

12वां संस्करण

धरोहर

2023

गृह पत्रिका

# "धरोहर"

## सर्वेक्षण सदन, विजय नगर, जबलपुर

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार लेखकों के निजी विचार हैं।

**मुख्य संरक्षक**
श्री धीरज शाह
निदेशक

**संयोजक**
श्री एन. के. गुप्ता
अधीक्षण सर्वेक्षक

**संपादक मंडल**
श्री प्रवीण दुबे
अधिकारी सर्वेक्षक
श्री विजय कुमार सोनी
अधिकारी सर्वेक्षक
राघवेन्द्र राजपूत
सर्वेक्षक

**संपादक**
श्रीमती ललिता राने
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

**टंकण एवं साज सज्जा**
श्री नितीश कुमार ठाकुर, अ.श्रे.लि.

## भारतीय सर्वेक्षण विभाग

म.प्र.भू.स्थानिक आँकड़ा केन्द्र जबलपुर (म.प्र.)

ई–मेल : mp.gdc.soi@gov.in

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि मध्य क्षेत्र के अन्तर्गत कार्यरत मध्य प्रदेश भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, जबलपुर द्वारा हिन्दी पत्रिका धरोहर के बारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं प्रसार के लिए इस प्रकार की हिन्दी पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन का अपना एक अलग महत्व है।

भारत की सभी भाषायें महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुये हिन्दी ने जनमानस के मन में आज विशेष स्थान बना लिया है। आइये, इस वर्ष हिन्दी दिवस के इस अवसर पर आप और हम मिलकर संकल्प लें कि अपनी हिन्दी भाषा अर्थात राजभाषा पर हम गर्व की अनुभूति करेंगे एवं अपने दैनिक कार्यो में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिन्दी में करके दूसरों के लिये अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वो की पूर्ति करेंगे।

म.प्र.भू.स्था.आँ.केन्द्र, जबलपुर हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिये भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को बुलन्दियों पर पहुँचाने के लिये निरन्तर प्रयासरत है। अतः म.प्र.भू.स्था.आँ.केन्द्र के संबंधित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मैं धन्यवाद देता हूँ और यह आग्रह करता हूँ कि इस दिशा में आगे भी प्रयास जारी रखेंगे।

अंत में, मैं पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों एवं पत्रिका प्रकाशन से संबंधित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके अथक प्रयासों के लिये हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे यह भी विश्वास है कि भविष्य में भी आप सभी लोग अपना महत्वपूर्ण सहयोग एवं प्रयास जारी रखेंगे। मैं यह भी कामना करता हूँ कि हिन्दी पत्रिका धरोहर अपने उद्येश्य प्राप्ति में पूर्ण सफलता प्राप्त करेगी।

हिन्दी हिन्दुस्तान की शान है।
हर हिन्दुस्तानी की पहचान है।
हिन्दी दिवस की हार्दिक
बधाई एवं शुभकामनायें।

**सुनील कुमार**
संयुक्त सचिव एवं
भारत के महासर्वेक्षक

# संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि धरोहर हिन्दी पत्रिका केन्द्रीय सरकार एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के आदेशों/निर्देशों का पालन करती हुई 12 वें अंक तक आ पहुँची है। धरोहर हिन्दी पत्रिका राजभाषा के प्रचार/प्रसार के कार्य में निरंतर अपना सहयोग प्रदान कर रही है। धरोहर हिन्दी पत्रिका कार्यालय के रचनाकारों के लिये प्रेरणा स्त्रोत है ।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे अधिकतम भारतवासी बोल एवं समझ सकते है। साथ ही राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता में भी सहायक है। पत्रिका के सृजन में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें प्रकाशित होने वाले लेख, कहानी, कविताओं, संस्मरण तथा अन्य रचनाओं का संकलन कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। परिणामस्वरूप कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की प्रतिभा को निखारने का यह पत्रिका कार्यालय को एक अनुपम अवसर प्रदान करती है।

हमें गर्व है कि हम कार्यालय का अधिकतम कार्य हिन्दी में सम्पन्न करते हुये राजभाषा विभाग के आदेशों का पालन शत्-प्रतिशत् कर रहे हैं तथा भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप कार्यालयीन कार्य को निष्पादित कर रहे हैं । मैं आशा और अपेक्षा करता हूँ कि कार्यालय पत्रिका का यह अंक अपने उद्देश्य को पूरा करते हुये अपने मानक स्वरूप को ग्रहण करे और कार्यालय के उद्देश्यों को साकार करे ।

मैं इस वैचारिक अभिव्यक्ति के सफलतम् संपादन हेतु संरक्षक के स्तर पर संयोजक, संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों के मूल्यवान योगदान के साथ-साथ सर्वेक्षण परिवार को बधाई देता हूँ और आप सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ ।

पत्रिका के इस अंक एवं भविष्य में पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु बहुत-बहुत शुभकामनायें ।

**धीरज शाह**
निदेशक

## अनुक्रमणिका


| क्रमांक | विषय | लेखक | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|---|
| 1 | संदेश | श्री सुनील कुमार, संयुक्त सचिव एवं भारत के महासर्वेक्षक | |
| 2 | संदेश | श्री धीरज शाह, निदेशक | |
| 3 | संपादकीय | श्रीमती ललिता राने, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी | 1 |
| 4 | कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती | मेजर दलजिंदर सिंह रोमाना, उप अधीक्षण सर्वेक्षक | 2 |
| 5 | मेरे फील्ड का संस्मरण (स्वरचित) | श्री एन.के.गुप्ता, अधीक्षण सर्वेक्षक | 3 |
| 6 | नई राष्ट्रीय भू–स्थानिक नीति, 2022 (स्वरचित) | श्री आर.डी. शाह, अधिकारी सर्वेक्षक | 4 |
| 7 | हो विधानों को बधाई | श्री सुनील कुमार दुबे, अधिकारी सर्वेक्षक | 5 |
| 8 | मुसाफिर | श्री सैजू ओ एस, अधिकारी सर्वेक्षक | 6 |
| 9 | आज के समय में सोशल मीडिया | श्री हेमेन्द्र सोनकुसले, अधिकारी सर्वेक्षक | 7 |
| 10 | यात्रा वृतांत (स्वरचित) | श्री प्रवीण कुमार दुबे, अधिकारी सर्वेक्षक | 8–9 |
| 11 | धोखे के शिकार है–विकलांग व्यक्ति (स्वरचित) | श्रीमती ललिता राने, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी | 10 |
| 12 | नर्मदा के पावन तट पर | श्री बलराज साहनी, कार्यालय अधीक्षक | 11 |
| 13 | फूफा जी (हास्य कथा) | श्री राकेश कुमार नामदेव, कार्यालय अधीक्षक | 12–13 |
| 14 | चुटकुला | श्री राज गौरव नामदेव, कार्यालय अधीक्षक | 14 |
| 15 | फ्रिज में रखे भोजन से फूड प्वाइजनिंग (स्वरचित) | श्री वेद प्रकाश गौतम, कार्यालय अधीक्षक | 15 |
| 16 | “स्वर सम्राट मोहम्मद रफी” | श्री मोहम्मद निसार, सर्वेक्षक | 16–18 |
| 17 | कैसे होतीं जग में खुशियाँ गर, माँ नहीं होती (स्वरचित) | श्री सुल्तान शाह, सर्वेक्षक | 19 |
| 18 | हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से | श्री देवेन्द्र साहू, सर्वेक्षक | 20 |
| 19 | मक्कार (स्वरचित) | श्री आशीष सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक | 21 |
| 20 | बस!अब रहने दो (स्वरचित) | श्री प्रशांत मिश्रा, प्रवर श्रेणी लिपिक | 22 |
| 21 | जीत पक्की है | अदीबा इम्तेयाज़, प्रवर श्रेणी लिपिक | 23 |
| 22 | भारत के सामाजिक–आर्थिक–पर्यटन विकास में भारतीय रेल की भूमिका | श्री प्रशांत मंडलोई, स्टेनोग्राफर ग्रेड–II | 24 |
| 23 | जीवन की मुस्कान (स्वरचित) | श्री नितीश कुमार ठाकुर, अवर श्रेणी लिपिक | 25 |
| 24 | मेरी आँखों में आँसू हैं....... | श्री रंजीत कुमार रविदास, अभिलेख ग्रेड–III | 26 |
| 25 | कविता जीवन की | श्री दिलीप राम, एम.टी.एस. | 27 |
| 26 | घर से दूर, भावनाओं से मजबूर | श्री हीरा लाल मीणा, एम.टी.एस. | 28 |
| 27 | आजादी | श्री बंशलाल, एम.टी.एस. | 29 |
| 28 | मिडिल क्लास– एक अनकही गाथा | श्री अशोक प्रसाद शिवहरे, कार्यालय अधीक्षक | 30–31 |
| 29 | बचपन (स्वरचित) | श्री सचेन्द्र कुमार यादव, अवर श्रेणी लिपिक | 32 |
| 30 | जीवन दर्शन (स्वरचित) | श्रीमति लक्ष्मी श्रीनिवासन, कार्यालय अधीक्षक | 33 |

# संपादकीय

राजभाषा हिन्दी की पत्रिका अर्थात विद्या की देवी माँ सरस्वती देवी की वाणी की ई पत्रिका धरोहर का बारहवां अंक पाठकों के हाथों में सौंपते हुये अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । धरोहर ई पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा प्रोत्साहन को समर्पित वार्षिक पत्रिका जो कि निदेशक म.प्र.भू.स्था.आँ. केन्द्र के नेतृत्व में प्रकाशित हो रही है । राजभाषा विभाग के दायित्वों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिये पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी प्रमुख दायित्व है । यह पत्रिका न केवल उस दायित्व का निर्वाह करती है वरन् संपूर्ण संघ सरकार के विभिन्न मंत्रालयों /कार्यालयों आदि में हिन्दी संबंधी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु औपचारिक मंच भी प्रदान करती है । अपनी संस्कृति को जीवंत रखने में हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

हम सबको हिन्दी भाषा की महत्ता को समझना है एवं भारत सरकार के नियमों के कारण नहीं बल्कि अपने पूरे मन से हिन्दी भाषा में अपने कार्यालयीन कार्य में शामिल करें । आशा करते हैं कि पत्रिका में समावेश किये सभी लेख पाठकों के स्वरूचि के हों, ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक हो ।

अन्त में मैं पत्रिका लेखन व प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिनके लेख आदि के कारण हिन्दी ई पत्रिका धरोहर पाठकों को सौंपी जा रही है । अन्त में मेरा कार्यात्मक प्रयास रहेगा कि इस कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का उत्तरोतर बहुआयामी विकास हो ।

ललिता राने
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

# कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

नन्ही चीटी चलती जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।।

मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।।

मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो।।

जब तक न सफल हो, नहीं चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।।

कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती.
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

**मेजर दलजिंदर सिंह रोमाना**
उप अधीक्षण सर्वेक्षक

# मेरा फील्ड का संस्मरण

सन् 1988 यह बात उन दिनों की है जब मैं नया-नया सर्वेक्षक बना था और पहली पोस्टिंग सीधा रायपुर छत्तीसगढ़ में हुई थी वहाँ से पहला-पहला फील्ड करने गया तो यह सोचा था कि मैं भोपाल मध्यप्रदेश का रहने वाला हूँ और फोटोस्टेटिक भोपाल यूनिट मिलेगी परन्तु मिल गया ट्रान्सफर फील्ड यूनिट में। फील्ड की जगह अंबिकापुर में थी जो आजकल छत्तीसगढ़ एरिया में आता है और कैम्पिंग प्लेस था रोनी जसपुर (छत्तीसगढ़) और मध्यप्रदेश का बार्डर था मुझे ट्रेन्गुलेशन करना था । हम लोग एक HS विजिट करने गये थे, जो कैम्पिंग प्लेस से करीब-करीब 8 कि.मी. दूर था परन्तु एरिया बहुत ही अन्डूलेशन था हमलोग सुबह-सुबह 5:30 को कैंप से निकले और चलते-चलते ऊपर-नीचे से होते-होते करीब-करीब 9 बजे एक जगह रुके। वहां चारो तरफ पीले-पीले रसीलेदार आम पेड़ों से टपककर जमीन पर बिखरे हुए थे । पहले तो लगा कि कही यह जहरीले न हों, पर तभी एक ग्रामीण आया बोला बाबूजी आप खा लीजिये यह बहुत अच्छे हैं बगल में पके हुए शहतूत का पेड़ भी था उसके शहतूत का स्वाद आज तक चखने नहीं मिला सबने छक कर आम चूसे और सच पूछें ऐसे आम फिर कभी नहीं खाए । हमलोग फिर HS विजिट करने चल पड़े ।चलते-चलते सामने से एक बहुत लम्बा साँप गुजर रहा था । कुछ क्षण तो डर के मारे साँस रोककर उसे सामने से जाते हुए देखते रहे कि कहीं मुड़कर यही न आ जाये ।हम लोग फिर ईश्वर का नाम लेकर आगे बढ़े । उस समय करीब 12 बजे थे। अतः सूरज बिल्कुल सिर पर था। अतः HS पर चढ़ना शुरू किया। हम लोगों ने एक नाला ढूँढ़ा । वहाँ से चढाई शुरू की । बीच में एक खड़ी चट्टान थी। किसी तरह से दो लोगों को सहारा देकर ऊपर चढ़ाया ।फिर एक रस्सी के सहारे सब लोग ऊपर चढ़ गये ।रायपुर में HS की विशेषता यह है कि दूर से कोनिकल पीक लगती है परन्तु जब उस पर चढ़े तो एक जमीन जैसा प्लेन नजारा था उसे प्लेटू कह सकते थे ।साथ ही लगा हुआ एक तरफ गाँव भी था । हम लोग करीब एक कि.मी. उस पर चढ़ गये फिर एक पहाड़ जैसा दिखा उस पर हम लोग चढ़े जब ऊपर पहुचे तो ऊपर एक प्लेन टॉप फिर डायरेक्शन देख कर करीब एक कि.मी. और चले वहां एक टीला था उस पर (करन) क्रास लगा था खलासी जल्दी-जल्दी पत्थर हटाने लगे ।बस एक आखरी पत्थर बचा था मैंने सोचा कि इसे हटाऊंगा जैसे ही मैंने पत्थर हटाया एक सटाक सी आवाज आई और देखा कि एक काला बिच्छू जिसने अपने डंक को पूरी ताकत से मारा था ।उसके पत्थर से टकराकर चिथड़े उड़ गये थे । अगर फ्रेक्शन ऑफ सेकंड की भी देरी हो जाती तो काम लग गया था । फिर चारों तरफ पेड़ ही पेड़ थे। खलासियों को दूसरे HS से हिलिओ की फ्लैश रे नहीं दिख रही थी । उन्होंने कुल्हाड़ी लाकर पेड़ बीच में से टहनियों एवं डालों की छँटाई शुरु की, तब जाकर observation शुरु हुआ ।अब चूँकि फ्लैट टॉप होती है तो एक साइड की लाइन क्लियर थी परन्तु एक तरफ का नहीं दिखाई दे रहा था । क्लीयरेंस चारों तरफ नहीं था इसलिए satelite स्टेशन बनाना पड़ा। फिर बीच-बीच में बादल आ जाते तो फ्लैश दिखाई नहीं पड़ती। बादल और सूरज की आँख मिचोली में पूरा दिन निकल गया और सारा काम निपटा कर करीब-करीब 6 बजे टॉप से उतरना शुरु किया। जब नीचे पहुँच गये तो गाँव वाले हम सबको घूरकर देख रहे थे हमने पूछा कि ऐसे क्यों घूर रहे हो। वे बोले कि इस एरिया में एक आदमखोर शेर घूम रहा है हम लोग समझे कि आप लोग उसकी भेंट चढ़ गये। हमारा सीना धक्क से रह गया। एक क्षण तो लगा कि दिल ने काम करना बंद कर दिया हो ।

एन.के. गुप्ता

अधीक्षण सर्वेक्षक

# नई राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022

आओ आज आपको,
नई राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति, 2022 का अर्थ बताते हैं
आइये विस्तार से समझाते हैं...
सर्वे से जुड़े कर्मचारी और अधिकारी के अनुभवों की योजना बनाते हैं।
भू-स्थानिक के योजना-2022 के 2025, 2030, 2035, ये तीन पंचवर्षीय लक्ष्य भारत को आत्म निर्भर, एकीकृत बनाते हैं ।
आइये विस्तार से समझाते हैं, भू-स्थानिक सूचना ढ़ांचा (आई.जी. आई. एफ.), आँकड़ा तथा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), अवसंरचना, नवाचार, मानक, क्षमता विकास, व्यवसाय करने में सुगमता और आँकड़ा
लोकतंत्रीकरण बनाते हैं।
आइये विस्तार से समझाते हैं...
राष्ट्रीय स्तर पर एक भू-स्थानिक डेटा संवर्धन विकास समिति और संस्थागत जिम्मेदारी,
दोनों ही नई राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 को बतलाते हैं।
अनेक पहलुओं पर दिशा निर्देश, व्यवहारवादी और उपयोगिता पर, आधारित बताते हैं।
आइये विस्तार से समझाते है...
नई राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति, 2022, एसओआई की भूमिका बताते व्यापक नोडल एजेंसी, उत्पादन/रख रखाव, 14 राष्ट्रीय मौलिक भू-स्थानिक डेटा विषय वस्तुओं में से एसओआई की महत्वपूर्ण 7 की जिम्मेदारी बताते हैं।
आइये विस्तार से समझाते है...
ज्योडटिक सन्दर्भ फ्रेम, ऑर्थोइमेजरी, प्रकार्यात्मक क्षेत्र, भौगोलिक नाम, ऊँचाई एवं गहराई, एन जी डी आर एवं यू जी आई और पी एन टी अवसंरचना का उत्तरदायित्व बताते हैं।
आइए विस्तार से समझाते हैं...
नई राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति, 2022 में केन्द्र योजनाओं,
आधुनिक प्रौद्योगिकी, तकनीकी साक्षरता को दर्शाते हैं।
आइए विस्तार से समझाते हैं...
नई राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति, 2022 एक नागरिक केन्द्रित नीति हैं जो भारत की आर्थिक समृद्धि और सम्पन्न सूचनाओं, कर्तव्यों और प्रतिबद्धताओं को बताते हैं।
आइए विस्तार से समझाते हैं...
राष्ट्रीय स्तर पर एक भू-स्थानिक डेटा संवर्धन और विकास समिति और संस्थागत जिम्मेदारी,
दोनों ही नई राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 को बतलाते हैं।
अनेक पहलुओं पर दिशा निर्देश,
व्यवहारवादी और उपयोगिता पर,
आधारित बताते हैं।
आइए विस्तार से समझाते हैं...

आर.डी. शाह
अधिकारी सर्वेक्षक

# हो विधानो को बधाई

चूम दर मंदिर शिवालय
नद-नदी सिक्के उछाले
पाठ जप-तप करके हारे
कर लिए उपवास सारे
मन्नतों के बांध धागे
काश कोई पुण्य जागे
कि सुनी जाए कही तो
अनसुनी सब याचनायें
हो विधानों को बधाई
है हमें शुभकामनाएँ

ज्ञान के प्रवचन विफल हैं
प्राण लेकर प्रण अटल हैं
प्रीत का हठ योग साधे
प्रश्न है अन्तःस्थ में आधे
क्यों नही तुम भाग्य मेरे
क्या नही मैं योग्य तेरे
पूर्ण हो किस विध कहो तुम
ये मनोरथ कामनाएँ
हो विधानों को बधाई
है हमें शुभकामनाएँ

संविधा आहुतियाँ या
पा सकेगी तृप्तियाँ क्या
वेदिका पर भोग छूटे
प्रीत के ये जोग झूठे
मैं भले वनवास चुन लूँ
अर्घ्य देकर प्यास चुन लूँ
किन्तु कोलाहल करेगी
मौन मेरी प्रार्थनाएँ
हो विधानों को बधाई
है हमें शुभकामनाएँ ।

सुनील कुमार दुबे
अधिकारी सर्वेक्षक

# मुसाफिर

मैं मुसाफिर था

राह देखते घर की

यादों ने फिर घर बुला लिया

घर पहुँचा ही था

कुछ पल परिवार के साथ बिताया ही था,

कि फिर नौकरी और घर की जिम्मेदारियों

ने मुझे वापस ऑफिस बुला लिया

यूँ मैं फिर ऑफिस आ गया

और अपने काम में मन से लग गया

पर फिर मन उदास है

परिवार से मिलने की आस है

और घर जाने का अगला प्लान तैयार है।

सैजू ओ एस
अधिकारी सर्वेक्षक

# आज की सोशल मीडिया

सोशल मीडिया को गतिशील डिजिटल परिदृश्य के रुप में परिभाषित किया जा सकता है, जहाँ व्यक्ति और समुदाय सूचना, विचार और अनुभव बनाने और आदान-प्रदान करने के लिए एक साथ आते है। फेसबुक और ट्विटर जैसी सोशल नेटवर्किंग साइटों से लेकर इन्स्टाग्राम और यू-टयूब जैसे मल्टीमीडिया से भरपूर प्लेटफॉर्म तक, सोशल मिडिया व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, संबंध निर्माण और सामाजिक संपर्क के लिए एक निरंतर विकसित होने वाला कैनवास प्रदान करता है, चाहे मित्रों और परिवार के साथ बने रहने के लिए हो, नवीनतम् समाचारों के बारे में सूचित रहने के लिए या एक व्यक्तिगत ब्रांड बनाने के लिए। सोशल मीडिया हमारे आसपास की दुनिया के साथ जुड़ने के तरीके का एक अभिन्न अंग बन गया है।

वर्तमान समय में देश में इन्टरनेट की उपलब्धता ने लोगों को सोशल मीडिया की ओर तेजी से आकर्षित किया है। आज भारत पूरे विश्व में इन्टरनेट के उपयोग के हिसाब से तीसरे स्थान पर है तो फेसबुक के इस्तेमाल में पहले स्थान पर है। दुनिया भर में अरबों सक्रिय उपयोगकर्ता के साथ, सोशल मीडिया व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, सहयोग और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है।

इसके कई लाभों के बावजूद, सोशल मीडिया की अपनी चुनौतियाँ भी हैं, जैसे गोपनीयता संबंधी चिंताएँ, गलत सूचनाओं का प्रसार, साइबर बुलिंग, ऑनलाइन ब्लेक मेलिंग, उत्पीड़न और इसकी लत की ओर ले जाने की क्षमता शामिल है। ये मुद्दे हमारे जीवन में सोशल मीडिया की भूमिका और इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने के तरीके खोजने की आवश्यकता के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं?

कुल मिलाकर हमारे सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति सावधान रहना और हमारे लिए काम करने वाले संतुलन को खोजना महत्वपूर्ण है। इसमें सोशल मीडिया पर बिताये जाने वाले समय को सीमित करना, उसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं की जाँच करना शामिल है। सही तरीके से उपयोग किया जाये तो सोशल मीडिया हम सभी के लिए वरदान ही है।

**हेमेन्द्र सोनकुसले**
अधिकारी सर्वेक्षक

# यात्रा वृतांत

मैं अधिकारी सर्वेक्षक के पद पर स्थानान्तरित होकर जबलपुर के कार्यालय से देहरादून गया था, उस समय के दौरान लगभग एक साल 6 माह अभ्याग्रहण पर जी एण्ड आर.बी. देहरादून के कार्यालय में पदस्थ था। मुझे आवँटित फील्ड कार्य में जी.पी.एस. के द्वारा ज्योइड मॉडल एवं डेम वेलिडेशन के लिए गोवा भेजा गया। इस समय में ज्योइड मॉडल कार्य में संलग्न होते समय गोवा और उसके आसपास के क्षेत्रों का यात्रा वृतांत लिख रहा हूँ।

गोवा का जिक्र आने पर समुद्र तटों का दृश्य हमारे मानस पटल पर अंकित होने लगता है लेकिन गोवा के जंगलों का भ्रमण, भगवान महावीर, वाइल्ड लाइफ सेंचुरी का विचरण सर्वेक्षण विभाग के फील्ड कार्य की अनोखी देन है। गोवा राज्य एक तरफ से सागर तो दूसरी तरफ पहाड़ों से घिरा है।

उत्तरी गोवा एवं दक्षिणी गोवा सांस्कृतिक रूप से भिन्न होने के बावजूद अपने आप में भौगोलिक, राजनैतिक एकात्मकता दर्शाते दिखाते हैं।

उत्तरी गोवा कोंकण गोवा कहलाता है। मंदिरों की समृद्ध विरासत को सँजोए गोवा जिस पर महाराष्ट्रीय संस्कृति की छाप स्पष्ट परिलक्षित होती है। बाल गंगाधर तिलक ने गणपति उत्सव जो प्रारंभ किया उसके दर्शन भी अभूतपूर्व रूप से इस क्षेत्र में मिलते हैं।

गणेश मंदिरों के साथ शिव एवं शक्ति के मंदिर और विट्ठल मंदिर भी इस क्षेत्र में स्थापित हैं। यहाँ मैं मापुसा में रूका था, मापुसा में 15 दिन रहने के दौरान इस जीवंत संस्कृति को निकट से देखने का सौभाग्य मिला। फील्ड कार्य में स्थानीय निवासियों से ज्ञात हुआ कि मापुसा सेंट्रल जेल एशिया की एक हाईटेक, मॉडल जेल है जिसमे अनधिकृत रूप से आये विदेशी नागरिकों के लिए डिटेंशन सेंटर बनाया है। हमारी टीम ने उत्तर गोवा में मापुसा के साथ में कोलवाल, त्रिविम, कारजुएम फोर्ट जैसे स्थानों का दौरा किया।

उत्तरी गोवा के साथ सटे दक्षिण पश्चिम महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में सावंत बाड़ी कुडाल अम्बोली कस्बों को देखने का मौका भी इस फील्ड कार्य के दौरान मुझे मिला।

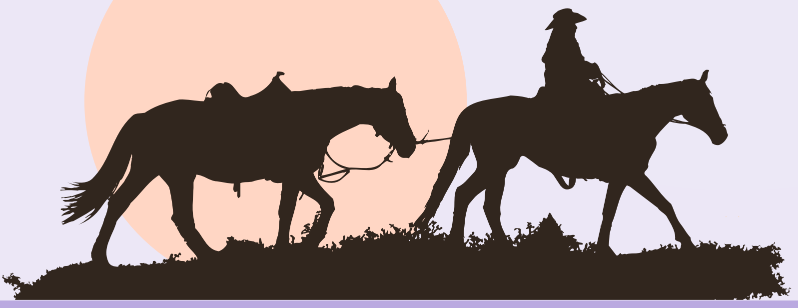

उत्तरी गोवा का यह क्षेत्र पुर्तगाली एवं कोंकण संस्कृति का मिश्रित क्षेत्र है जैसा कि मैने पूर्व में बताया कि इस क्षेत्र में मंदिरों की बहुतायत है लेकिन इस क्षेत्र में चर्च भी बहुत है, जो पुर्तगाली उपनिवेश से विकसित आचार-विचार को अपनाये हैं। यह क्षेत्र वनों से आच्छादित है।

गोवा में क्यूरिम, माण्डेरिम बागा, कैंडोलिम को देखने के लिए पर्यटक आते हैं, जिसमें कैंडोलिम एवं बागा बीच बहुत प्रसिद्ध है।

गोवा प्राकृतिक संसाधनों में भी प्रचुर है। बेंकी डे गोवा पिकॉक फार्म, सनवोर डैम्वाटर फॉल मनोहरी दृश्य उत्पन्न करते है। इस कार्य में डैम वेलिडेशन के लिए विचोलिम, संकक्यूलिम सतारी स्थानों पर जी.पी.एस. सर्वेक्षण का कार्य किया है। इसके अतिरिक्त कर्नाटक, गोवा की सीमा पर चोरला घाट व्यू प्वाइंट देखने का अवसर भी मुझे प्राप्त हुआ।

विशेष रूप से मैं आपको बताना चाहूँगा कि उत्तरी गोवा नैसर्गिक झरने, जलप्रपात, झीलों से ओत-प्रोत क्षेत्र है। इस क्षेत्र से कर्नाटक का बेलगावी (बेलगाँव) शहर पास में ही स्थित है। बेलगावी राजनैतिक दृष्टि से तो वैसे कर्नाटक राज्य के अन्तर्गत आता है परन्तु मान्यताओं, संस्कृति, परिवेश के दृष्टिकोण से यहाँ महाराष्ट्र की स्पष्ट झलक परिलक्षित होती है। बेलगावी एवं उसके आस-पास के क्षेत्र के बारे में विस्तार से चर्चा दक्षिण गोवा के अंक में अर्थात अगले अंक में करेंगे। इस अंक में चूँकि उत्तर गोवा का यात्रा वृतांत है तो उसकी बात कर रहा हूँ।

उत्तरी गोवा का भ्रमण राष्ट्रीय राजमार्ग-66 (मुबई से कन्याकुमारी) के द्वारा किया जा सकता है। यह राजमार्ग पश्चिम घाट के समानान्तर उत्तर से दक्षिण यानि मुंबई से केरल की ओर जाता है।

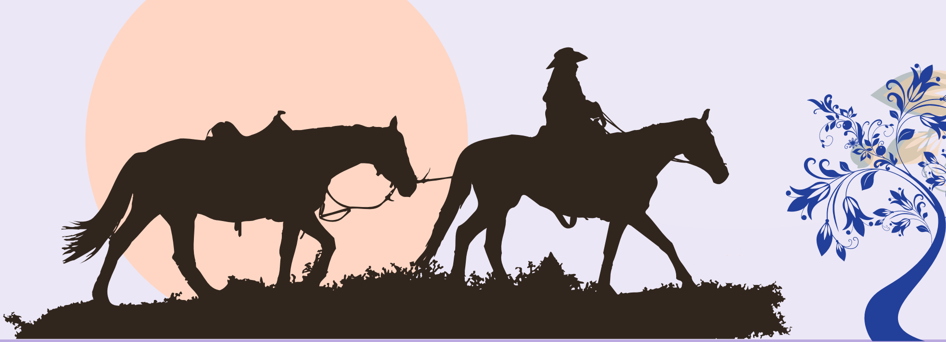

प्रवीण कुमार दुबे
अधिकारी सर्वेक्षक

# धोखे के शिकार हैं- विकलांग व्यक्ति

सर्वप्रथम ऊपर वाले ने ही विकलांगों को निःशक्त बना दिया। विकलांग व्यक्ति की योग्यता हमेशा प्रश्नों के कटघरे में खड़ी रहती है। सरकार की तरफ से इनके लिये बड़े-बड़े मंचो से सरकारी योजनाओं का ऐलान होता रहता है। इनके हितों की रक्षा के लिये सरकारी नियम-विनियम, अधिनियम बनाती है लेकिन बावजूद इसके इनकी स्थिति जस की तस बनी हुई है। सरकार के इतने प्रयासों के बावजूद वहीं के वहीं क्यों है। कभी आपने सोचा है कि उन्हें अपना भवष्यि सुधारने की इच्छा नही है या इन्हें भविष्य सुधारने का मौका ही नही दिया जाता है। प्रत्येक राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार समाज कल्याण विभाग खोलती है एवं इनके उत्थान के लिये गैर सरकारी संस्थानों को अनुदान राशि भी मुहैया कराती है। तदोपरान्त सरकार सोचती है कि अब इनका विकास हो जायेगा। लेकिन सच्चाई यह है कि अधिकांश गैर सरकारी संस्थान चाहते ही नही है कि इनका भविष्य सँवरे और इनका विकास हो।

इतने अधिक नियम-अधिनियम विकलांगों के प्रमाण पत्र के लिये बनाये कि बहुत से विकलांग अपनी श्रेणी के प्रमाण पत्र न बनाकर नियम-विनियमों की समस्याओं में ही उलझकर रह गये।

मेरे विचार से विकलांग जन अपने विकास के लिये यदि खुद प्रयास करें तो देर से ही सही लेकिन एक दिन वो लक्ष्य को जरुर प्राप्त कर लेंगे।

विकलांग व्यक्तियों का घर बसाना अर्थात शादी के बंधन में बंधना भी एक स्वस्थ पहल है। सामाजिक तौर पर यदि हम और आप बजाय दिखावे के इनकी वास्तविक रूप से मदद करें तो इनकी उन्नति निश्चित रूप से तय है। जैसे इनके पालन-पोषण का खर्चा उठाना, इनके प्रमाण पत्र आदि बनवाना तथा इनको सफल जीवन प्रेरित करना। इनकी विकलांगता को ध्यान में रखते हुये इनके लिये रोजगार के संशाधन जुटाना इत्यादि।

आप सभी को विदित है कि इन्होंने अपनी समस्याओं को हल करने के लिये सरकार के समक्ष कई स्थानों पर हड़ताल/प्रदर्शन किया लेकिन मीडिया ने न उन्हें सही प्रचार दिया और न ही सही माहौल निर्मित होने दिया। इनमें से बहुतों ने समाचार पत्रों में अपना नाम लिखकर सरकार की घोषित योजनाओं को लागू करने के लिये धरना दिया, प्रदर्शन किया। उनके पास बहुत से सवाल है जो सवाल बनकर ही रह गये हैं।

**ललिता राने**
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

# नर्मदा के पावन तट पर

नर्मदा या यूँ कहिए माँ नर्मदा पुण्यतम् नदी मानी जाती है। इसी पवित्रतम् नदी के किनारे बसा है मेरा शहर जबलपुर और मैं स्वयं को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे माँ नर्मदा के पावन तट के निकट रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग 30 वर्ष पूर्व मैं नर्मदा के ग्वारीघाट से लगभग 1 किमी दूर स्थित अपने निवास में रहने आया, तब से मेरा यही प्रयास रहता है कि मैं प्रतिदिन माँ के दर्शन का पुण्य लाभ अर्जित करुँ।

नर्मदा तट पर जाकर एक असीम सी शांति प्राप्त होती है जिसका वर्णन करना संभव नही है। नर्मदा तट पर मंदिरों की घंटियों की गूँज, मंत्रोपचार, भजनों का स्वर, पक्षियों का कलरव वहाँ के वातावरण को अत्यधिक मनमोहक बना देता है।

माँ नर्मदा का उद्‌गम स्थल विन्ध्याचल में मैकल पहाड़ी श्रृंखला के अमरकंटक नामक स्थान पर है। यह नदी अमरकंटक की पहाड़ियों से निकल कर छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात से होकर नर्मदा, भरौंच के आगे खंभात की खाड़ी में विलीन हो जाती है।

पवित्र नर्मदा नदी के तट पर अनेकों तीर्थ स्थान हैं, जहाँ श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। माँ नर्मदा का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है, जिसमें ऐसा कहा गया है कि नर्मदा नदी के दर्शन मात्र से ही समस्त पापों का नाश हो जाता है। परम्परा के अनुसार नर्मदा की परिक्रमा करने का प्रावधान है, जिससे श्रद्धालुओं के समस्त पापों का नाश हो जाता है।

नर्मदा तट पर विचरण करने से न सिर्फ हमारे तन को शांति और आनंद प्राप्त होता है बल्कि हमारी आत्मा में भी नई ऊर्जा का संचार हो जाता है। एक बार नर्मदा तट पर भ्रमण करके आ जाने पर हमारा मन स्वतः ही पुनः नर्मदा तट पर घूमने का करता है क्योंकि वहाँ का सुहावना मौसम हमें अपनी ओर आकर्षित करता है।

**बलराज साहनी**
कार्यालय अधीक्षक

# फूफा जी -(एक हास्य कथा)

फूफा एक रिटायर्ड जीजा होता है, जिसने एक जमाने में जिस घर में शाही पनीर खा रखा हो और उसे सुबह शाम धुली मूंग की दाल खिलाई जाये, उसका फू और फा करना वाजिब है, इसलिए ऐसे शख्स को फूफा कहना उचित है।

बुआ के पति को फूफा कहते हैं। फूफाओं का बड़ा रोना रहता है शादी ब्याह में। किसी शादी में जब भी आप किसी ऐसे अधेड़ शख्स को देखें, जो पुराना, उधड़ी सिलाई वाला सूट पहने, मुँह बनाये, तना-तना सा घूम रहा हो जिसके आसपास दो-तीन ऊबे हुए से लोग मनुहार की मुद्रा में हो तो बेखटके मान लीजिये कि यही बंदा दूल्हे का फूफा है।

ऐसे मांगलिक अवसर पर यदि फूफा मुँह न फुला ले तो लोग उसके फूफा होने पर ही संदेह करने लगते हैं। उसे अपनी हैसियत जताने का आखिरी मौका होता है यह उसके लिये और कोई भी हिंदुस्तानी फूफा इसे गँवाना नहीं चाहता है।

वह किसी-न-किसी बात पर अनमना होगा, चिड़-चिड़ाएगा। तीखी बयानबाजी करेगा। किसी बेतुकी-सी बात पर अपनी बेइज्जती होने की घोषणा करता हुआ किसी ऐसी जानी-पहचानी जगह के लिये निकल लेगा, जहाँ से उसे मनाकर वापस लाया जा सके।

दरअसल फूफा जो होता है, वह व्यतीत होता हुआ, जीजा होता है। वह यह मानने को तैयार नहीं होता कि उसके अच्छे दिन बीत चुके है और उसकी सम्मान की राज गद्दी पर किसी नये छोकड़े ने जीजा होकर कब्जा जमा लिया है। फूफा, फूफा नहीं होना चाहता। वह जीजा ही बने रहने की नाकाम कोशिश करता है।

फूफा को यह गलतफहमी होती है कि उसकी नाराजगी को बहुत गंभीरता से लिया जायेगा, पर अमूमन ऐसा होता नहीं। लड़के का बाप उसे बतौर जीजा ढ़ोते-ढ़ोते पहले से थका हुआ होता है। ऊपर से लड़के लड़की के ब्याह के सौ लफड़े। इसलिये वह एकाध बार खुद कोशिश करता है और थक-हारकर अपने इस बुढ़ाते जीजा को अपने किसी नकारे भाई बंद के हवाले कर दूसरे ज्यादा जरूरी कामों में जुट जाता है। बाकी लोग फूफा के ऐंठने को मानते हैं कि यह यही सब करने ही आया था और अगर यही नहीं करेगा तो क्या करेगा ? जाहिर है कि वे भी उसे कतई तवज्जो नहीं देते। फूफा यदि थोड़ा-बहुत भी समझदार हुआ तो बात को ज्यादा लम्बा नहीं खींचता।

वह माहौल भाँप जाता है। मामला हाथ से निकल जाये, उसके पहले ही मान जाता है। बीबी की तरेरी हुई आँखें उसे समझा देती हैं कि बात को और आगे बढ़ाना ठीक नहीं। लिहाजा, वह बहिष्कार समाप्त कर ब्याह की मुख्य धारा में लौट आता है। हालांकि, वह हँसता -बोलता फिर भी नहीं और तना-तना सा बना रहता है। उसकी एकाध उम्रदराज सालियाँ और उसकी खुद की बीबी जरूर थोड़ी-बहुत उसके आगे-पीछे लगी रहती हैं। पर जल्दी ही वे भी उसे भगवान भरोसे छोड़-छाड़ कर दूसरों से रिश्तेदारी निभाने में व्यस्त हो जाती हैं।

फूफा बहादुर शाह जफर की गति को प्राप्त होता है। अपना राज हाथ से निकलता देख कुढ़ता है, पर किसी से कुछ कह नहीं पाता। मन मसोस कर रोटी खाता है और दूसरों से बहुत पहले शादी का पंडाल छोड़ खर्राटे लेने अपने कमरे में लौट आता है। फूफा चूँकि और कुछ कर नहीं सकता, इसलिये वह यही करता है।

इन हालात को देखते हुए मेरी आप सबसे यह अपील है कि फूफाओं पर हँसिये मत। आप आजीवन जीजा नहीं बने रह सकते। आज नहीं तो कल आपको भी फूफा होना है।

राकेश कुमार नामदेव
कार्यालय अधीक्षक

# चुटकुला

पति-पत्नी आपस में नाराज चल रहे थे। नाराजगी भी इतनी थी कि एक ही कमरे में रहते हुए आपस में एक-दूसरे को बोलते तक नहीं थे। दोनों अपने-अपने काम में कोई कमी नहीं आने देते जैसे सुबह पति उठता तो पत्नी चाय टेबल पर रख जाती और ऑफिस का समय होता तो लंच बॉक्स तैयार करके देती इसी तरह पति भी ऑफिस से आते हुए सब्जी राशन आदि लाकर रख देता।

एक दिन पति को जरूरी काम से ऑफिस में आठ बजे की जगह छः बजे पहुँचना था लेकिन उसकी नींद सात बजे से पहले नहीं खुलती थी।

रात को सोने के समय पति को विचार आया कि सुबह मुझे पांच बजे कौन उठायेगा। पति के दिमाग में एक उपाय आया और वह एक पर्ची अपनी पत्नी के नाम लिखने लगा, देखो मीना मुझे सुबह ऑफिस जल्दी जाना है इसलिए मुझे पांच बजे जगा देना। इस तरह पर्ची लिख कर वह पत्नी के बेड पर रख आया और बेफिक्र होकर सो गया। पत्नी पर्ची उठा कर पढ़ी और कुछ सोचा और वह भी सो गई।

सुबह पति की नींद खुली तो उसने उठकर घड़ी की तरफ देखा, घड़ी में सात बज रहे थे फिर उसकी निगाह तकिए पर गई तो वहा एक पर्ची रखी थी। उस पर लिखा था जी, उठ जाओ सुबह के पांच बज गए हैं।

**राजगौरव नामदेव**
सर्वेक्षक

# फ्रिज में रखे भोजन से फूड प्वाइजनिंग

आमतौर पर लोग यही जानते है कि फ्रिज में रखा भोजन काफी समय तक खराब नहीं होता और उसे कई-कई दिनों तक खाया जा सकता है। यही कारण है कि लोग फल, दूध, अंडे तथा हरी सब्जियों के साथ-साथ पके पकाये भोजन भी फ्रिज में रखते हैं और कई दिनों तक उस का इस्तेमाल करते हैं। अधिकांश बड़े होटल तथा रेस्तरां में भी सब्जी एवं मीट पहले से ही पका कर फ्रिज में रख लिए जाते हैं।

अब तो डब्बा बंद भोजन का चलन भी काफी तेजी से बढ़ गया है। इन्हें बेचने वाली कंपनियों का दावा होता है कि इन के खाने से शरीर पर कोई गलत प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन डाक्टरों का मानना है कि फ्रिज में रखे भोजन से फूड प्वाइजनिंग के खतरे ज्यादा होते है। टाटा मेमोरियल अस्पताल, मुंबई में माइक्रोबायोलोजी विभाग की अध्यक्ष डा. रोहिणी केलकर का कहना है कि वोल्टेज की अनियमितता तथा उचित कूलिंग व्यवस्था न होने के कारण फ्रिज में रखे भोजन में लिस्टिरिया, मोनोसाइटोजेनस, अरसिनिया एंट्रोकोलोलिका, सालमोनेला तथा क्रिप्टोस्पोरिडियम जैसे अनेक बैक्टीरिया, वायरस तथा प्रोटोजोआ पैदा होते हैं, जो फूड प्वाइजनिंग के मुख्य कारक होते हैं। हाल के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि अमेरिका में 63 प्रतिशत फूड प्वाइजनिंग फ्रिज में रखे भोजन को खाने से होती है।

कई लोगों को बासी मीट खाना ज्यादा पसंद होता है। वे रात का बना मीट फ्रिज में रख देते हैं और दूसरे दिन खाते हैं, किन्तु डॉक्टरों का कहना है कि कम पके मीट में फूड प्वाइजनिंग पैदा करने वाले बैक्टीरिया पनप जाते है और 5 डिग्री सेंटीग्रेड तक के अत्यंत तापमान पर भी अस्तित्व में बने रहते हैं। इसलिए फ्रिज में रख देने के बाद यह मान लेना कि पका हुआ मीट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होता, एक भ्रामक धारणा है। इतना ही नहीं, लिस्टिरिया नामक बैक्टीरिया पैदा हो जाने के बाद यदि उसे आधे घंटे तक गरम किया जाए तो भी अस्तित्व में बना रहता है। यह सब से अधिक समय तक प्रभाव में बना रहने वाला बैक्टीरिया है। यह चीज, पनीर तथा हरी पत्तेदार सब्जियों में भी पैदा हो जाता है। यहाँ तक कि यह आइसक्रीम जैसे ठंडे पदार्थों में भी पाया जाता है।

लिस्टिरिया के अलावा एक दूसरा बैक्टीरिया है। सालमोनेला, जोकि पोल्ट्रीफार्म में रखे कच्चे मीट, कटे मीट और फ्रिज में रखे मीट, मछली आदि में पैदा हो जाता है। सामान्यतया फूड प्वाइजनिंग की शिकायतें इसी बैक्टीरिया के कारण होती है। यह चाकलेट तथा ऐसे बेकरी के सामानों, जिन में कच्चा अंडा डाला जाता है, में भी पैदा हो जाता है।

इसलिए आवश्यक है कि फास्टफूड के फैशन में न पड़ कर घर में बने स्वच्छ, ताजे, गरम भोजन का उपयोग किया जाए।

**वेद प्रकाश गौतम**
कार्यालय अधीक्षक

# स्वर सम्राट मोहम्मद रफी

दुनिया जिन्हें रफी अथवा रफी साहब के नाम से बुलाती है, हिंदी सिनेमा जगत के सर्वकालिक श्रेष्ठतम पार्श्वगायकों में से एक थे। मोहम्मद रफी को उनकी मखमली आवाज की मिठास, मधुरता और विभिन्न रागों के साथ शास्त्रीय संगीत पर महारथ के चलते उन्हें 'शहंशाह-ए-तरन्नुम' भी कहा जाता है। उनकी बहुआयामी आवाज सभी अदाकारों पर परफैक्ट फिट बैठती थी। उनकी ये खासियत थी कि वे जब भी कोई गीत गाते तो उस कैरेक्टर में अपने आपको पूरी तरह से ढ़ाल लिया करते थे। राग दरबारी, पहाड़ी, भैरवी, बसंत, मल्हार और मालकौंस जैसे अद्भुत रागों पर उन्हें महारथ हासिल थी। रफी साहब के गीतों ने देश में गंगा-जमुना तहजीब, देशप्रेम, भाईचारा और देश की एकता-अखंडता को बनाये रखने में अपना एक अहम् रोल अदा किया है।

सुरीली आवाज के धनी स्वर-सम्राट मोहम्मद रफी का जन्म 24 दिसम्बर सन् 1924 को अमृतसर के एक छोटे से गाँव 'कोटला सुल्तान सह' में हुआ था। वहीं उनकी प्राथमिक शिक्षा हुई। वे बनावट या छल कपट से कोसों दूर, बहुत ही सरल मन के इंसान थे। चैरिटी के कामों में वे बहुत आगे रहते थे। वतनपरस्ती पर उन्होंने 150 से अधिक सुपरहिट गीत गाये हैं। सन् 1962 में भारत-चीन की जंग के दौरान उन्होंने वतनपरस्ती की अलख जगाने के लिए वतन की आबरु खतरे में है और आवाज दो हम एक हैं जैसे जोशीले गीत गाए जिसने लोगों में हुब्बुल वतनी का ऐसा जोश पैदा किया कि पूरा भारत एकजुट हो गया। जंग के दौरान ट्रेजिडी किंग 'दिलीप कुमार' के साथ मिलकर उन्होंने सरहद पर 1400 फीट से भी ऊंची 'छंगू' और 'सांगला' जैसी दुर्गम जगहों पर जहाँ कि सांस लेना भी दूभर होता है वहाँ जाकर अपने जोशीले गीतो से फौजी जवानों की खूब हौसला अफजाई की। 30 जनवरी सन् 1948 में महात्मा गाँधी की नृशंस हत्या से व्यथित होकर उन्होंने गीतकार राजेन्द्र कृष्ण और संगीतकार हुस्नलाल-भगतराम के साथ मिलकर श्रद्धांजलि स्वरूप रातों-रात बैठकर एक गैर-फिल्मी गीत 'सुनो सुनो ए दुनिया वालों, बापू की ये अमर कहानी' की रचना तैयार की। वतनपरस्ती के जज्बे वाला ये गीत बेहद कामयाब हुआ।

सुर-सम्राट मोहम्मद रफी की रेशमी आवाज के जादू का असर न केवल भारत और उसके आसपास के मुल्कों में था बल्कि दूर-दराज के बहुत से देशों में भी उसका जबरदस्त असर था। दुनिया भर में उनके लाइव प्रोग्राम की बहुत डिमांड हुआ करती थी। सन् 1960 में पूर्वी अफ्रीका से अपने लाइव स्टेज प्रोग्राम की शुरुआत करने वाले मोहम्मद रफी ने यूएसए, यूके, कनाडा, हॉलैंड, वेस्टइंडीज, कुवैत, बहरीन, ओमान, दुबई, शारजहां, अबुधाबी, मोरिशस, फिजी, सूरीनाम, मलेशिया, सिंगापुर, हाँगकांग, श्रीलंका जैसे तकरीबन 25 देशों में अपने जबरदस्त और कामयाब लाइव शो किये ।

रफी साहब की कोशिश होती थी कि जिस देश में वे प्रोग्राम कर रहे है वहाँ उस देश की लैंग्वेज में एक गीत जरूर सुनाया जाये। ओमान में उन्होंने वहाँ के सुल्तान सैय्यद कबूस बिन सईद अल सईद की शाही मेज़बानी में एक अरबी गीत गया। सन् 1980 में श्रीलंका में वहाँ के प्रधानमंत्री आर. प्रेमदासा और राष्ट्रपति जे. आर. जयवर्धने के आतिथ्य में हुए प्रोग्राम में लाखों की रिकार्ड तोड़ पब्लिक मौजूद थी। वहाँ उनका जबरदस्त स्वागत सत्कार हुआ। यहाँ उन्होंने सिंघली लैंग्वेज में भी एक गीत सुनाया। सन् 1975 में अफगानिस्तान की यात्रा पर काबुल रेडियो पर "अई ताजा गुल तू जीनत ए गुलजार कीस्ती" फारसी गीत, अफगानी गायिका जिल्ला के साथ गाया। यहाँ ये गौरतलब है कि हरदिल अजीज मोहम्मद रफी ने भारत की 19 भाषाओं के अलावा 7 विदेशी भाषाओं में बेहतरीन गीत गाये हैं जो कि एक अनूठा विश्व रिकार्ड है।

जबकि उनकी शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय तक ही सीमित रही है। मोहम्मद रफी की आदत थी कि जब भी वे किसी टूर प्रोग्राम में जाते थे तो शो से हुई आमदनी का बड़ा हिस्सा चैरिटी के काम में लगा दिया करते थे। सन् 1977 में लन्दन टूर के बाद उन्होंने नेशनल हास्पिटल मुंबई को लाखों रुपये की कीमत वाली "डायलिसिस मशीन" दान में दी थी। कैंसर जैसे गंभीर मरीजों के खून को साफ करने/परिवर्तित करने में काम आने वाली ये एक जीवनदायिनी मशीन है, जो उस वक्त पूरे भारत में मौजूद दूसरी डायलिसिस मशीन थी।

मोहम्मद रफी भारतीय फिल्म जगत के सबसे निस्वार्थ, नेक और बेहतरीन इंसानों में शुमार किये जाते हैं। शहद सी मीठी आवाज वाले मोहम्मद रफी की आवाज, शास्त्रीय संगीत हो या भजन, ठुमरी, गजल, कव्वाली, देशभक्ति के गाने हो अथवा रोमांस, गंभीर या दुःख भरे गीत हों, हर अंदाज में हूबहू ढ़ल जाती थी। सभी नवोदित गीतकार, संगीतकार, अदाकारों की ये हसरत होती थी कि उनका पहला गीत रफ़ी साहब की आवाज में रिकार्ड हो, क्योंकि ये उनके कैरियर के कामयाब होने और नाम कमाने का सबसे बड़ा शगुन साबित होना था। बिजी शेड्यूल के बावजूद बड़े विनम्र और सीधे-सादे मोहम्मद रफी किसी को ना नहीं कहते थे। बहुत से ऐसे मौके भी आए जब पैसे की तंगी का सामना कर रहे निर्माताओं से उन्होंने बिना पैसे लिए या शगुन के तौर पर सिर्फ एक रूपये कुबूल कर उनके गीत पूरी शिद्दत और लगन के साथ रिकार्ड करवा दिए जो कि सुपरहिट साबित हुए। उन्होंने सिनेमा जगत के नायक, सहनायक, चरित्र अभिनेता से लेकर हास्य अभिनेता तक तकरीबन 617 कैरेक्टर्स के लिए अपनी आवाज दी है जो कि अपने आप में एक रिकार्ड है।

55 साल की उम्र में 24 दिसंबर सन् 1980 को दिल का दौरा पड़ने से मोहम्मद रफी का मुंबई में देहांत हो गया। उस दिन भारी बारिश के बावजूद उनकी अंतिम यात्रा में दिलीप कुमार, राजकपूर, शम्मी कपूर, मनोज कुमार, राजेंद्र कुमार, धर्मेन्द्र जैसे फिल्म स्टारों के साथ-साथ लाखों लोग मौजूद थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की अंतिम यात्रा के बाद देश में पहली बार श्रद्धांजलि के लिए लोगों का ऐसा हुजूम देखा गया था । संगीत जगत में उनके योगदान के मद्देनजर महाराष्ट्र सरकार की ओर से 9 अगस्त 1986 को मुंबई के बांद्रा में चौक का नामकरण पद्मश्री मोहम्मद रफी के नाम पर किया गया।

भारत सरकार की ओर से तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने सन् 1967 में मोहम्मद रफी को "पद्यमश्री" से सम्मानित किया, वह भारतीय डाक विभाग ने उनकी याद में 2 डाक टिकिट भी जारी किये। 6 फिल्म फेयर अवार्ड के साथ सन् 1967 में "बाबुल की दुआएँ लेती जा" और सन् 1977 में फिल्म 'हम किसी से कम नही' के गीत "क्या हुआ तेरा वादा" के लिए उन्हें नेशनल फिल्म अवार्डस प्राप्त हुए। सन् 2001 में उन्हें "बेस्ट सिंगर ऑफ द मिलेनियम"का अवार्ड प्राप्त हुआ। सन् 2013 में CNN-IBN सर्वे के अनुसार फिल्म "सूरज" के गीत "बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है" को दक्षिण एशिया के पिछले 100 सालों के इतिहास में सबसे लोकप्रिय गीत के अवार्ड से नवाजा गया। सन् 1948 में स्वतंत्रता दिवस की पहली वर्षगांठ पर उन्हें प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा "सिल्वर मेडल" अवार्ड से सम्मानित किया गया।

**मोहम्मद निसार**
सर्वेक्षक

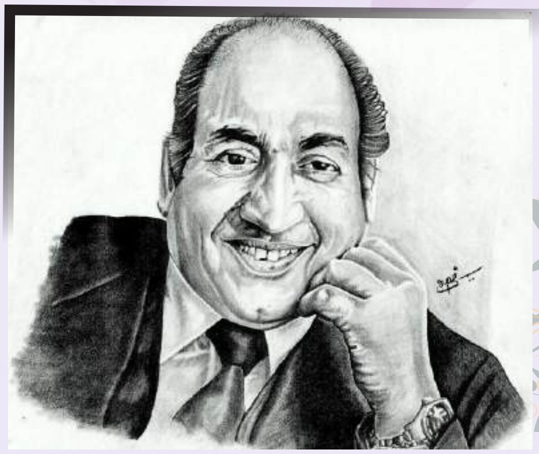

# कैसे होती जग में खुशियाँ, गर माँ नही होती

सोचता हूँ तन्हा कभी, जब भी माँ के बारे में
अल्फाज़ कम होते हैं, तारीफ गुनगुनाने में
उनको जब देखूं नहीं, मेरी सुबह शाम नही होती
कैसे होती जग में खुशियाँ, गर माँ नहीं होती ।
रब जैसी दिखती है मुझको, सूरत उसकी प्यारी-सी
इस काँटों भरी दुनिया में, छाया उसकी फुलवारी-सी
उनको जब न देखूं तो, चेहरे पे मेरे मुस्कान नहीं होती
कैसी होती जग में खुशियाँ, गर माँ नहीं होती।
हाथों में उनके जादू बसता, आँखों में लाड़ का दरिया है
घर में सबको जोड़े रखती, माँ सबकी खुशी का जरिया है।
माँ के आंचल में छुप जाने से, बाधाएँ परेशान नहीं करती
कैसी होती जग में खुशियाँ, गर माँ नहीं होती।
दिन वो एक बुरा जीवन में, रात अँधियारी छा गयी
हाथ जो माँ ने मेरा छोड़ा, दुनिया मेरी बदल गयी
तब महसूस हुआ था मुझको, माँ के बिन जिंदगी आसान नहीं होती
कैसी होती जग में खुशियाँ गर माँ नहीं होती।
माँ तुम दूर नही हो मुझसे, दिल में हरदम बसी हो
बातें सारी याद हैं मुझको, यादें भी कुछ दबी हैं
माँ की डाँट बड़ी मीठी-सी, लोरी भी वो काम नहीं करती
कैसे होती जग में खुशियाँ, गर माँ नहीं होती।
मैं तुमको समझाता हूँ उस नीरस जग के बारे में
जहाँ माँ का प्यार नहीं उस हर पल के बारे में
फूलों की क्यारी में, हर पत्ते और डाली में
महकती कलियों में भी फिर जान नहीं होती
धरती होती हरी-भरी, चेहरे पर मुस्कान नहीं होती
ऐसी होती हमारी दुनिया, गर माँ नहीं होती।

सुल्तान शाह
सर्वेक्षक

# हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से

आज तिरंगा फहराता है अपनी पूरी शान से,
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से।

आजादी के लिए हमारी लंबी चली लड़ाई थी,
लाखों लोगों ने प्राणों से कीमत बड़ी चुकाई थी।

व्यापारी बनकर आए और छल से हम पर राज किया,
हमको आपस में लड़वाने की नीति अपनाई थी।

हमने अपना गौरव पाया, अपने स्वाभिमान से,
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से।

गाँधी, तिलक, सुभाष, जवाहर का यह प्यारा देश,
जियो और जीने दो का सबको देता संदेश है।

पहेली बनकर खड़ा हिमालय इसके उत्तर द्वार पर,
हिन्द महासागर दक्षिण में इसके लिए विशेष है।

लगी गूँजने दसों दिशाएं वीरों के यशवंत से,
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से।

हमें अपनी मातृभूमि में इतना मिला दुलार है,
उसके आँचल की छैया में छोटा सा संसार है।

हम न कभी हिंसा के आगे अपना शीश झुकाएंगे,
सच पूछो तो पूरा विश्व भी हमारा परिवार है।

विश्व शांति की चली हवाएं अपने हिन्दुस्तान से,
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से।

आज तिरंगा फहराता है अपनी पूरी शान से,
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से।

देवेन्द्र साहू
सर्वेक्षक

# मक्कार

घर से निकलते ही टूट कर चार बन गया,
देख माँ तेरा बेटा पढ़ लिख कर गँवार बन गया।

मुझे पता है 24 साल बाद आँख से ओझल की पीड़ा,
लोगों का क्या उनके लिए तो कामयाबी का इश्तेहार बन गया।

अब कहाँ रही दिवाली, होली, दशहरा,
अब तो बेटा ही घर का त्योहार बन गया।

आज सुबह समय से बिना किसी डाँट के खुद उठा मैं,
देखिए पापा आपका लड़का भी जिम्मेदार बन गया।

आज फिर माँ को भूख नही होगी, पापा का पेट भरा होगा,
अब लगता है कि सच में कितना मक्कार बन गया।

आशीष सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

# बस! अब रहने दो

पहचान रहने दो।
तुम बनो फरिश्ता,
हमें केवल इंसान रहने दो।

छोड़ दो मैं,
मैं की हठ।

रखो धैर्य,
और रिश्तों में जान रहने दो।

आधुनिक दौर में,
खुद को इतना न बदलो।

यार थोड़ा तो,
वेदों का ज्ञान रहने दो।

यूँ धर्म के नाम पर,
सबको अफज़ल मत बनाओ।

किसी को अली, कलाम
और रसखान रहने दो।

मिलना होगा मिल जाएगा,
पीछा क्यूँ करना।

अपने अंदर थोड़ा तो,
स्वाभिमान रहने दो।

मत बाँटो धर्म के,
नाम पर देश को।

सबके हिस्से में,
हिन्दुस्तान रहने दो।

लगाओ ताले,
वृद्धा आश्रम में।

माँ बाप के हिस्से में,
अपना मकान रहने दो।

प्रशांत मिश्रा
प्रवर श्रेणी लिपिक

# जीत पक्की है

कुछ करना है तो डट कर चल,
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।
लक पर तो सभी चल लेते हैं,
कभी इतिहास को पलट कर चल।
बिना काम के मुकाम कैसा,
बिना मेहनत के, दाम कैसा।
जब तक न हाँसिल हो मन्जिल,
तो राह में, आराम कैसा।
अर्जुन सा निशाना रख,
न कोई बहाना रख।
जो लक्ष्य सामने है,
बस उसी पे ठिकाना रख।
सोच मत, साकार कर,
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल,
किसी और का न इन्तजार कर।
जो चले ये अकेले,
उनके पीछे आज मेले हैं।
जो करते रहे इन्तजार,
उनकी जिन्दगी में आज भी झमेले हैं।

**अदीबा इम्तेयाज**
प्रवर श्रेणी लिपिक

# भारत के सामाजिक-आर्थिक-पर्यटन विकास में भारतीय रेल की भूमिका

भारत में एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करना हो या भारतीय पर्यटन को जानना समझना हो, भारतीय रेल द्वारा हमें सबसे करीब से जानने को मिलता है। साथ ही रेल यात्रा का एक अलग ही आनंद होता है। बचपन में रेलगाड़ी की खिड़की के पास बैठकर बाहर प्रकृति की सुंदरता को देखना, जब रास्ते में मोड़ आते थे तब खिड़की में से पूरी रेलगाड़ी एवं उसका इंजन दिखायी देना, उसे देखने का आनंद कुछ और ही था। वही आनंद आज भी रेल यात्रा के दौरान मिलता है। भारत में रेल से यात्रा करना हमेशा से ही यात्रियों को अनेक आकर्षक अनुभव प्रदान करता है। विशाल समुद्री तट, पहाड़, नदी, झरने, हरे-भरे जंगल इत्यादि, यह सब मिलकर रेल यात्रा को चार चाँद लगा देते हैं।

भारतीय रेल एशिया का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है। यहाँ मेल एवं एक्सप्रेस रेलगाड़ियों के अतिरिक्त पर्यटन के लिए विशेष रेलगाड़ियाँ भी चलायी जाती हैं। पैसेंजर रेलगाड़ियाँ महानगरों की जीवन-रेखा का कार्य करती हैं। भारत में कुछ विशेष रेलगाड़ियाँ ऐसी चलायी जाती हैं, जो विश्वभर के पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र भी हुई हैं जैसे डेक्कन क्वीन, रामायण एक्सप्रेस, महाराजा एक्सप्रेस, भारत गौरव एक्सप्रेस, हेरिटेज ऑन व्हील्स इत्यादि। ऐसी विशेष रेलगाड़ियाँ भारतीय पर्यटन एवं भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभाती हैं।

भारत के पहाड़ों में भी कुछ रेलवे लाइनें बनाई गयी हैं, जो भारत के पर्वतीय पर्यटन में सहायक होती हैं। इन रेलगाड़ियों में दार्जिलिंग हिमालयी रेलवे, नीलगिरी हिमालयी रेलवे एवं कालका-शिमला रेलवे प्रमुख हैं। इन तीनों रेलवे लाइनों को सामूहिक रूप से भारत की पर्वतीय रेल के नाम से यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया है। इस प्रकार पर्यटन को तो बढ़ावा मिलता ही है, साथ ही कई लोगों को रोजगार के साधन प्राप्त होते हैं।

पिछले कुछ दशकों में भारतीय रेल ने प्रशंसनीय उन्नति की है। भारत के प्रत्येक कोने को रेल परिवहन से जोड़ने का काम तेजी से हुआ है। भूमिगत रेलगाड़ियाँ भी शहर के परिवहन के लिए आदर्श होती हैं क्योंकि वे सतह पर बहुत ही कम जगह लेती हैं एवं नियमित समय अंतराल पर बड़ी संख्या में लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हैं। भारतीय रेल नेटवर्क भीतरी इलाकों एवं बाजारों का विकास करने में प्रमुख भूमिका निभाता है ।

रेलगाड़ियों में अलग-अलग जगहों के लोगों का एक साथ आना और विचारों का आदान-प्रदान करना लोगों के सामाजिक स्वरुप को निखारता है। भारतीय रेल आधुनिक भारत का एक अभिन्न अंग है एवं भारत में रेल का को अन्य विकल्प नहीं है।

**प्रशांत मंडलोई**
स्टेनोग्राफर ग्रेड–ए

# जीवन की मुस्कान

कुछ साल पहले की बात है कि मैं अपने परिवार सहित शादी में शामिल होने हेतु अपने घर से दिल्ली जा रहा था। रेलवे स्टेशन पर मालूम हुआ कि जिस वातानुकूलित कोच में हमारा रिजर्वेशन था, उस में किसी खराबी की वजह से उस की जगह दूसरे दर्जे का स्लीपर कोच लगाया गया है।

हमें यह जानकर बहुत चिंता होने लगी, क्योंकि जनवरी का महीना था लेकिन वातानुकूलित कोच में बिस्तर मिलने की सुविधा होने से हम ने अपने साथ में बिस्तर इत्यादि नहीं लिए थे।

दिन भर हमारी यात्रा इसी चिंता में कटी कि अब रात का सफर कैसे कटेगा, बिना बिस्तर इत्यादि के बच्चे ठंड में कैसे सो पाएंगे।

करीब 8 बजे अज़मेर स्टेशन पर एक मुस्लिम सज्जन ट्रेन में चढ़े। हमारी बातों से उन्होंने हमारी परेशानी समझते हुए अपनी एकदम नई 2 रजाइयाँ एवं 2-3 चादरें, जो कि उन्होंने उसी दिन अजमेर से खरीदी थी, हमें दे दीं।

हमारे संकोच करने पर भी उन्होंने जबरदस्ती देते हुए कहा, आप लोग इन से अपना काम चलाइए।

इस तरह उनकी सहायता से हमारी रात की यात्रा अच्छी तरह कटी। आज भी उन सज्जन की याद आते ही मेरा दिल उनके प्रति कृतज्ञता से भर जाता है।

बात कुछ साल पहले की है। मेरे मित्र को अपने बीवी बच्चों के साथ एक शादी में अपने ससुराल जाना पड़ा था। घर में उसके वृद्ध माता पिता ही थे।

रात तकरीबन 2 बजे मित्र के वृद्ध पिताजी की तबीयत बिगड़ गई। उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। मित्र की माताजी ने कॉलोनी में 2 परिचितों के यहाँ फोन किया। आता हूँ कह कर एक ने रिसीवर रख दिया और दूसरे की पत्नी ने बताया था कि उस का पति दौरे पर हैं।

माताजी कॉलोनी में 2 और परिचितों के घर भी गई लेकिन किसी के जल्दी न आने से वह काफी घबरा गई क्योंकि इलाज में देरी होने से खतरा और भी बढ़ सकता था। उन की समझ में नहीं आ रहा था कि बीमार पति को कैसे अस्पताल ले जाएँ।

तभी पीछे के घर से मेरे मित्र के माता जी की आवाज आयी। मैं घर से बाहर निकला। माता जी बहुत परेशान थीं। उन्होंने मुझसे कहा बेटा हमारे पति बीमार हैं। उनको जल्दी ही अस्पताल ले जाना है। मैंने तुरंत गाड़ी उठायी और पिता जी को ले कर सीधे अस्पताल चला गया, अस्पताल में डॉक्टर ने उन्हें भर्ती कर लिया अगले ही दिन पिता जी ठीक होने लगे। यह पल मेरे जीवन का सबसे सुखद पल रहा क्योंकि मेरे सहयोग से माताजी के जीवन में खुशियाँ आ गयी। यह मेरे जीवन का सबसे सुखद पल रहा।

**नितीश कुमार ठाकुर**
अवर श्रेणी लिपिक

# मेरी आँखों में आँसू हैं

मेरी आँखों में आँसू हैं.... मगर मैं रो नही सकता.....
सफलता के पंख कटे तो क्या कुछ हो नही सकता
मेरी आँखों में आँसू हैं.... मगर मैं रो नही सकता.....

लोग ताने कसते हैं, मेरी दुर्दशा पर हँसते हैं
तानों के ऐसे बोझ को अब मैं ढ़ो नही सकता
मेरी आँखों में आँसू हैं.... मगर मैं रो नही सकता....

आशाएँ माँ बाप की जुड़ी हैं मुझसे
चला था जब घर से..... वादा किया था खुद से
मुश्किल कैसी भी हो..... आत्म विश्वास को खो नही सकता
मेरी आँखों में आँसू हैं... ..... मगर मैं रो नही सकता.....

मन के काले बादल छा गये तो क्या
मुश्किलों के तूफान आ गये तो क्या
एक रात के बाद सुकून ना आए ऐसा हो नही सकता
मेरी आँखों में आँसू हैं.... मगर मैं रो नही सकता.....

हारी बाजी को मैं जीत कर दिखाऊंगा
दिन रात मेहनत करके अपनी मंजिल को पाऊँगा
पथ कैसा भी क्यूँ न हो
बिना मंजिल को पाए अब मैं सो नही सकता
मेरी आँखों में आँसू हैं.... मगर मैं रो नही सकता....

रंजीत कुमार रविदास
अभिलेखाल ग्रेड–III

# कविता जीवन की

हँसी के बिना बिताया दिन बर्बाद किया हुआ दिन है,
सबसे दुःखद चीज जिसकी मैं कल्पना कर सकता हूँ।

वो है विलासिता का आदी होना हम सोचते बहुत हैं,
और महसूस कम करते हैं जिंदगी करीब से देखने में एक सदी है,

लेकिन दूर से देखने पर कागजी है
मैं ईश्वर के साथ शांति से हूँ मेरा टकराव इंसानों के साथ है

जिंदगी बढ़िया हो सकती है अगर लोग आपको अकेला छोड़ दें
हम सभी एक दूसरे की मदद करना चाहते हैं

मनुष्य ऐसे ही होते हैं हम एक दूसरे के सुख
के लिए जीना चाहते हैं दुःख में आप जितनी

देर तक गुस्से में रहते हैं अपने मन की शांति से वंचित हैं
मुझे लगता है सही समय पर काम करना जीवन में उचित है।

दिलीप राम आ. जुगेश्वर राम
एम.टी.एस

# घर से दूर, भावनाओं से मजबूर

माँ बेटे की आँख मिचौली,
बेटा बोले अगली होली।
माँ बोले गुझिया, पापड़, अक्षत, रोली
बेटा बोले अगली होली।
बेटा घर आ जा छत पर, कच्चे पापड़ बिछाए हैं,
देख गुझिया के अलावा तेरे लिए, खोआ शक्कर भी सजाए हैं।
पापा से बोल दिया तुझे महँगी, पिचकारी दिला देंगे,
आजा पूत तेरी पसंद की मिठाई, हाथों से खिला देंगे।
दोस्तों के साथ घूम लेना, रोकेंगे नहीं,
देर तक रंग खेल लेना, टोकेंगे नहीं।
फीका आँगन फीकी खोली,
बेटा बोले अगली होली।

हीरा लाल मीना
एम.टी.एस.

# आजादी

पंछी है कैद अगर।
तो उड़ने में कर मदद तू।।
रात है काली अगर।
दिया जला कर तू।।

बीत गये कई साल रूढ़िवादी विचारों में उलझ कर।
सुलझा मन के भाव तू।।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा।
सब के जीवन का कर सम्मान तू।।
तोड़ दे दीवारें सारी।
आगे बढ़ विजयी राह पर।।

उन वीरों ने क्या पाया?
अगर तू कभी डर में खोया।।
उठ जा तू छूले आसमान।
आजाद पे है सबका हक।।

आजाद पंछी है कैद अगर, तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है काली अगर, दिया जला कर रोशन कर।।

**बंशलाल**
एम.टी.एस.

# मिडिल क्लास - एक अनकही गाथा

"मिडिल क्लास" का होना भी, किसी वरदान से कम नही है।
कभी बोरियत नही होती,
जिंदगी भर कुछ ना कुछ आफत,
लगी ही रहती है।

"मिडिल क्लास" वालों की स्थिति, सबसे दयनीय होती है।

न इन्हें "तैमूर" जैसा बचपन नसीब होता है,
न "अनूप जलोटा" जैसा बुढ़ापा, फिर भी
अपने आप में उलझते हुए. व्यस्त रहते हैं।

"मिडिल क्लास" होने का भी अपना फायदा है,
चाहे **BMW** का भाव बढ़े या **AUDI** का
या फिर नया **iphone** लाँच हो जाये,
इनको फर्क नही पड़ता।

"मिडिल क्लास" लोगों की
आधी जिंदगी तो ... झड़ते हुए बाल और बढ़ते हुए पेट को रोकने में ही चली जाती है।

इनके यहाँ फ्रूटी, कोल्ड ड्रिंक एक साथ तभी आते हैं, जब घर में कोई बढ़िया वाला रिश्तेदार आ रहा होता है।

"मिडिल क्लास" वालों के यहाँ कपड़ों की तरह ही, खाने वाले चावल की भी तीन किस्में होती है।
रोजाना, साप्ताहिक और पार्टी वाला।
छानते समय चायपत्ती को दबा-दबाकर आखिरी बून्द तक निचोड़ लेना ही,
"मिडिल क्लास" वालों के लिए,
परमसुख की अनुभूति होती है।
ये लोग रूम फ्रेशनर का इस्तेमाल नही करते, सीधे अगरबत्ती जला लेते हैं।

"मिडिल क्लास" भारतीय परिवार के घरों में Get together नही होता,
यहाँ "सत्यनारायण भगवान" की कथा होती है। इनका मासिक बजट इतना सटीक होता है, कि तनख्वाह अगर 31 के बजाय 1 को आये, तो गुल्लक फोड़ना पड़ जाता है।

"मिडिल क्लास" लोगों की आधी ज़िन्दगी तो "बहुत महँगा है" बोलने में ही निकल जाती है।

इनकी "भूख" भी....
होटल के रेट्स पर निर्भर करती है।दरअसल महंगे होटलों की मैन्यू-बुक में,"मिडिल क्लास" इंसान, "फूड आइटम्स" नही बल्कि
अपनी "औकात" ढूंढ रहा होता है।

इनके जीवन में कोई वैलेंटाइन नही होता, "जिम्मेदारियाँ" जिंदगी भर "बजरंग दल सी पीछे लगी रहती हैं।

"मिडिल क्लास" दूल्हा-दुल्हन भी मंच पर ऐसे बैठे रहते हैं मानो जैसे,
किसी भारी सदमे में हो।

अमीर शादी के बाद चलता बनते हैं, और "मिडिल क्लास" लोगों की शादी के बाद, टेन्ट बर्तन वाले पीछे पड़ जाते हैं।

"मिडिल क्लास" बंदे को पर्सनल बेड और कमरा भी, शादी के बाद ही नसीब हो पाता है।

"मिडिल क्लास"... बस ये समझ लो कि जो तेल सर पे लगाते हैं, वही तेल मुँह पर भी रगड़ लेते हैं।

एक सच्चा "मिडिल क्लास" आदमी गीजर बंद करके तब तक नहाता रहता है, जब तक कि नल से ठंडा पानी आना शुरू ना हो जाए।

रूम ठंडा होते ही ए.सी. बंद करने वाला, "मिडिल क्लास" आदमी चंदा देने के वक्त नास्तिक हो जाता है, और प्रसाद खाने के वक्त आस्तिक।

दरअसल "मिडिल क्लास" तो चौराहे पर लगी घण्टी के समान है, जिसे लूली-लँगंडी, अँधी-बहरी, अल्पमत, पूर्णमत

हर प्रकार की सरकार पूरा दम से बजाती है।

"मिडिल क्लास" को आज तक बजट में वही मिला है, जो अक्सर हम मंदिर में बजाते हैं। फिर भी हिम्मत करके "मिडिल क्लास" आदमी, पैसा बचाने की बहुत कोशिश करता है, लेकिन, बचा कुछ भी नहीं पाता।

हकीकत में "मिडिल क्लास" आदमी की हालत, पंगत के बीच बैठे हुए उस आदमी की तरह होती है, जिसके पास पूड़ी-सब्जी चाहे इधर से आये, चाहे उधर से उस तक आते-आते खत्म हो जाती है।

"मिडिल क्लास" के सपने भी लिमिटिड होते हैं।टंकी भर गई है, मोटर बंद करना है, गैस पर दूध उबल गया है,

चावल जल गया है, इसी टाइप के सपने आते हैं। दिल में अनगिनत सपने लिए,

वह बस चलता ही जाता है.....चलता ही जाता है.....और अन्ततः "मिडिल क्लास" आदमी, दुनिया से यूँ ही चला जाता है।

**अशोक प्रसाद शिवहरे**
कार्यालय अधीक्षक

# बचपन

बचपन बड़ा सुहाना था,
हाथ में स्लेट और पेंसिल का जमाना था।
दादा दादी का प्यार
और आँगन का आशियाना था।
पापा का डाँटना,
तो मम्मी का मनाना था।
भाई-बहन से झगड़ा,
लेकिन दिल में प्रेम सुहाना था।
एक पल में रूठना,
तो अगले पल में खिलखिलाना था।
खुले आँगन में सोना,
तो शीतल हवा का सिहलाना था।
चन्दा मामा की लुका छिपी,
और तारों का टिमटिमाना था।
मिट्टी पत्थर से खेलना,
तो कागज की कस्ती को बनाना था।
गर्मियों की छुट्टियों में,
मामा के घर जाना था।
ब्लैक एण्ड व्हाइट टी.वी. में
एंटीना से सिग्नल मिलाना था।
बड़ों के लिये रामायण तो,
शक्तिमान बच्चों को बहुत सुहाता था।
गाँव का लोक संगीत,
तो रेडियो का जमाना था।
रंग-विरंगी तितलियों के पीछे भागना,
तो कागज के नाव को पानी में बहाना था।
बचपन बड़ा सुहाना था,
हाथ में स्लेट और पेसिंल का जमाना था।

सचेन्द्र कुमार यादव
अवर श्रेणी लिपिक

# जीवन दर्शन

मायने नहीं कि
कितने पूर्णमासी के चाँद देखे,
कितने अमावस के ?
सूरज ने कितना तपाया ?
कितने केश सुनहरे हुए ?
कभी बादली छुपा सूरज
झमाझम बरसात ने कितना भिगोया ?
तर तो हुए पर क्या बेहतर हुए ?
तारों से भरी रात भी देखी ।
देखा बहुत कुछ पर
उससे भी ज्यादा अनदेखा रह गया ।
सब कुछ क्षणभंगुर है, तो सच क्या है ?
साँसो के चलने और रूक जाने के बीच
जो जीवन है, वही सच है ।
कम हो या ज्यादा मायने ये नही,
मायने ये है, कि कितने जीवन बदले ?
कितने पल सार्थक किये ?
मिलना तो मिट्टी को मिट्टी से ही है,
पर कितने सुंदर साँचे गढ़े ?
कितने आँसू पोंछे, कितने, मुस्कान खिलाये ?
कितने खाली गागर, प्रेम से सराबोर किये ?
रखा क्या है, साँसो की गिनती में,
साल दर साल बुझती मोमबत्ती में,
मिसाल बनो, जलती मशाल बनो,
किसी बेमिसाल कहानी का आगाज़ बनो ।

श्रीमति लक्ष्मी श्रीनिवासन
कार्यालय अधीक्षक

# हिन्दी पखवाड़ा 2022 की झलकियां

# स्वतंत्रता दिवस

# दैनिक अखबारो में

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 11वीं छःमाही बैठक संपन्न



जबलपुर ● खबरों की दुनिया

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय-2, जबलपुर की 11वीं छमाही बैठक दिनांक 16.12.2022 को रेल सौरभ कॉलोनी के सभागार में संपन्न हुई। इस अवसर पर पश्चिम मध्य रेलवे के अपर महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री शोभन चौधुरी ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पत्रिका 'सरल' के तीसरे अंक का विमोचन किया। इस बैठक में क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त कार्यालय जबलपुर, 29वीं वाहिनी भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल जबलपुर, भारतीय सर्वेक्षण विभाग जबलपुर, भारतीय खान ब्यूरो जबलपुर, पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफइंडिया जबलपुर, केन्द्रीय विद्यालय सीएमएम जबलपुर, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय जबलपुर, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर, उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर एवं महानिदेशक लेखा परीक्षा कार्यालय जबलपुर आदि कार्यालयों को पुरस्कृत किया गया। बैठक का संचालन एवं आभार प्रदर्शन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव श्री राज रंजन श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी द्वारा किया गया। अपने उद्बोधन में श्री चौधुरी ने सभी सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीतियों का अनुपालन हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है। आज सभी सदस्यों की उपस्थिति राजभाषा हिंदी के प्रति उनके समर्पण को दर्शाती है। उन्होंने सूरत शहर में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में समिति सदस्य कार्यालयों की भागीदारिता के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों से राजभाषा प्रयोग-प्रसार के पक्ष में वातावरण निर्मित होता है। उन्होंने भारत सरकार की राजभाषा संबंधी अनुदेशों के अनुपालन में आनेवाली कठिनाईयों का आपसी विचार-विमर्श से समाधान ढूंढने पर बल दिया तथा इस अवसर पर सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का सराहनीय प्रयोग करने वाले कार्यालयों को पुरस्कृत किया उन्हें बधाई दी।

इस बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समित कार्यालय क्रमांक 02 के जबलपुर स्थित विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों, संस्थानों एवं उपक्रमों के विभाग प्रमुखों के साथ उन कार्यालयों के राजभाषा प्रभारी एवं अधिकारी उपस्थित थे। उपस्थित सदस्यों ने अपने कार्यालयों की राजभाषा प्रगति तथा उल्लेखनीय कार्यों से अवगत कराया तथा राजभाषा के प्रयोग प्रसार पर बहुमूल्य सुझाव भी दिए।

स्टूडेंट्स ने जाना- सर्वे में कैसे मदद करता है ड्रोन

भू-वैज्ञानिकों ने विरासतों के संरक्षण का दिया संदेश

विज्ञान को समझकर जीवन में उतारें

वैदिक विज्ञान पर व्यक्त किए विचार

तैयारियों पर की चर्चा

70 किमी के दायरे में अब मिल रहा अचूक डाटा, शहर की हर गतिविधि हो सकेगी ट्रैस

स्वामित्व योजना में हुआ उपयोग

चार घंटे की कवायद 10 मिनट में पूरी

# गणतंत्र दिवस

# विज्ञान दिवस

# योग दिवस

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

SURVEY OF INDIA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

CERTIFICATE OF APPRECIATION

Presented to Sh. Sandeep Srivastava for outstanding work in Surveying and Mapping in Svamitva Scheme

Date : 6th November, 2022

Place : Dehradun, Uttarakhand

(Sunil Kumar)
Surveyor General of India

(Dr. Srivari Chandrasekhar)
Secretary to Government of India
Department of Science & Technology

भारतीय सर्वेक्षण विभाग म.प्र. भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के निदेशक, श्री धीरज शाह,
श्री संदीप श्रीवास्तव, निदेशक राष्ट्रीय भू–स्थानिक आँ. के. देहरादून,
श्री दीपक कुमार, अधीक्षण सर्वेक्षक, ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा देहरादून,
तथा वरिष्ठ अधिकारीगण एवं डिजिटाइजर

# भारतीय सर्वेक्षण विभाग

सर्वेक्षण सदन, विजय नगर जबलपुर म.प्र.